{ श्रीहनुमान स्तुति }

प्रनवउ पवनकुमार खल बल पावक ग्यानधन
जासु ह्रदय आगार बसही राम शर चाप धर ||
अतुलित बलधामम हेम शैलाभदेहम
दनुज वन कृशानुम ज्ञानिनामग्रगण्याम
सकल गुणनिधामम वानराणामधीशं
रघुपति प्रियभक्तं वातजातम नमामि ||
गोष्पदीकृतवारीशम मशकीकृतराक्षसम
रामायणं महामालारत्नं वंदेहं निलात्मजम |
अंजनानंदनम वीरम जानकीशोकनाशणम
कपीशमक्षहंतारं वंदे लंकाभयंकरम ||
उल्लंघ्यम सिन्धो: सलिलम सलिलम
यः शोकवाहिनम जनकात्मजाया |
आदाय तनैव ददाह लंका
नमामि तम प्रांजलि रान्जनेयं ||
मनोजवम मारुततुल्यवेगम
जितेन्द्रियं बुद्धिमताम वरिष्ठम
वात्मजम वानरयूथमुख्यम
श्रीरामदूतम शरणम प्रप्धये |
आन्जनेयमती पाटलालनम
कान्चानाद्रिकमनीयविग्रहम |
पारिजाततरुमूलवासिनम
भावयामि पावमाननंदनम ||
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनम
तत्र तत्र कृतमस्तकान्जलिम
वाश्पवारीपरीपूर्णलोचानाम'
मारुतिम नमत राक्षसांतकम

|| **इति श्री हनुमत स्तवन सम्पूर्ण** ||